# (e) -PROCEEDINGS

# PROCEEDINGS

# INTERNATIONAL CONFERENCE

**Sponsored by**

**Indian council of Social Science Research**

**On**

# Education for Happiness

**11-13 March, 2016**

**Organized by**

**Faculty of Education & Home Science Department**

## NAWAL KISHORE BHARTIYA MUNICIPAL GIRLS (P.G.) COLLEGE, CHANDAUSI

**AFFILIATED TO M.J.P. ROHILKHAND UNIVERSITY, BAREILLY**

**NAAC ACCREDITED WITH CGPA 2.56**

**www.nkbmgcollege.org**

Scanned by CamScanner

# शोध मंथन

## विशेष ऑनलाइन अंक

# International Conference Proceedings

## N K B M G (PG) College,Chandausi (U.P.)

-:Editors:-

***Dr. Anamika,*** *Asst. Prof., M.Ed.*

***Ms. Garima Tyagi,*** *Asst. Prof., Dept. of H.Sc.*

***Ms. Kanchan Saxena,*** *Asst. Prof., Dept. of H.Sc.*

*Published by*
**Journal Anu Books**
*Shivaji Road, Meerut*
*0121 2657362, 9997847837*
*anubooksmeerut@hotmail.com*
*www.anubooks.com,*



Scanned by CamScanner

# INDEX


| S.N | Title with Author's Name | Pg.No. |
|---|---|---|
| 1 | उच्च शिक्षा में शान्ति और मूल्य परक शिक्षा द्वारा मानवीय खुशी का सृजन -*डॉ0 अमित अग्रवाल* | 7 |
| 2 | वैदिक साहित्य में निरूपित नीति शिक्षा (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में) -*एकता .* | 14 |
| 3 | शिक्षा आनन्द की अनुभूति है - *श्रीमती गार्गी कौशिक* | 16 |
| 4 | खुशहाली के लिए शिक्षा' : परिवार तथा शिक्षण संस्थानों की भूमिका - *डॉ. गिरधारीलाल शर्मा* | 19 |
| 5 | शिक्षा और आनंद का अंतःसंबंध - *डॉ. कमलेश कुमारी* | 22 |
| 6 | शिक्षा में प्रसन्नता के लिए नवाचार की भूमिका - *कीर्ती सिंह* | 24 |
| 7 | वर्तमान में शिक्षा पद्धति की बदलती अवधारणा - *डॉ0 कृति कौशिक* | 26 |
| 8 | अध्यापक शिक्षा में एनसीटीई की भूमिका - *डॉ. कुलदीप कुमार* | 28 |
| 9 | शिक्षा के आनंद की प्रक्रिया – *डॉ महेश चौधरी* | 31 |
| 10 | कुछ कदम आनन्द की राह पर' - *डॉ0 अर्चना कुमारी* | 34 |
| 11 | जीवन के आनन्द की प्राप्ति में टैगोर जी का शैक्षिक दर्शन - *डॉ0 मीनू शर्मा* | 37 |
| 12 | दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिकता का सैद्धांतिक स्वरूप - *डॉ नीता गुप्ता ,डॉ मीरा अग्रवाल* | 39 |
| 13 | प्रसन्नता के लिए शिक्षा के बहुआयामी सन्दर्भ - *पवन कुमार यादव* | 41 |
| 14 | प्रसन्नता के लिए शिक्षा – सामाजिक संदर्भ में। - *पूजा अग्रवाल', डॉ0 राजकुमार''* | 46 |
| 15 | वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में वैदिक शिक्षा का गवेष्णात्मक अध्ययन - *डॉ0 पूनम* | 48 |
| 16 | ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) - *डा0 आर0के0 मौर्य* | 52 |
| 17 | मुक्ति के लिए षिक्षा - *राजवन्त सिंह पृथ्वीराज* | 57 |
| 18 | घर या परिवार : शिक्षा के अभिकरण के रूप में -*डा0 शैली शर्मा* | 60 |
| 19 | सैद्धान्तिक दृष्टिकोण – संगीत द्वारा आनन्द प्राप्ति - *डॉ0 सीमा बंसल* | 63 |
| 20 | वर्तमान भारतीय परिवार एवं शिक्षा -*डा0 सीमा कौशिक* | 67 |
| 21 | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपनिषद्कालीन गुरुकुल -*शिखा रानी* | 70 |
| 22 | मानवीय प्रसन्नता एवं शिक्षा - *डॉ0 शुचि श्रीवास्तव* | 73 |
| 23 | तकनीकी युग में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता -*सोनिका रानी* | 76 |
| 24 | भारत में शिक्षक–शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान स्थिति -*सुधीर कुमार',डॉ0 स्नेहलता शिवहरे* | 79 |
| 25 | आनन्द के लिए शिक्षा -*डॉ0 सुमन कुमारी'एडॉ0 रामजी मेहता* | 84 |
| 26 | भारतीय दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा -*डॉ0 तारकेश्वर गुप्ता* | 88 |
| 28 | आज की शिक्षा की गुणवत्ता -*सन्तोष कुमार* | 97 |
| 27 | शिक्षा के लिये शैक्षिक निर्देशन तथा परामर्श की आवश्यकता -*डॉ0 गीतिका नागर* | 94 |
| 29 | प्रसन्नता के लिए शिक्षा (दार्शनिक विचार) - *डॉ0 (श्रीमती) गीता शर्मा* | 99 |
| 30 | प्रसन्नता के लिए शिक्षा–दर्शनशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में - *दीपिका दयालु* | 103 |
| 31 | शिक्षा के विकास में विभिन्न षैक्षिक साधनों का महत्व - *मुजम्मिल कमर* | 105 |
| 32 | बदलते भारतीय सामाजिक परिवेश में शिक्षा और शिक्षक - *डॉ0 सतीश कुमार सिंह* | 108 |
| 33 | खुशहाली के लिए शिक्षा प्रारम्भिक शिक्षा का वर्तमान परिद्रश्यए मुद्देए चुनौतियां तथा समाधान –*डॉ0 सचिन कुमार सिंह* | 111 |
| 34 | संगीत शिक्षा में आनन्दानुभूति –*डा0 रोली कनौजिया* | 114 |
| 35 | समाज एवं बाल अधिकार संरक्षण – *डॉ0 निरंकार सिंह* | 117 |
| 36 | नैतिक शिक्षा के अभाव से कम होती प्रसन्नता_– *डा0 दीपा पाठक* | 127 |




Scanned by CamScanner

*International Conference Proceedings,*

*N. K. B. M. G. (P.G.) College, Chandausi* **Special Issue** शोध मंथन ISSN 2454-339X

# "खुशहाली के लिए शिक्षा" : परिवार तथा शिक्षण संस्थानों की भूमिका

**डॉ. गिरधारीलाल शर्मा***

*सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

4

मानव सृष्टि–निर्माता की श्रेष्ठतम कृति है। किन्तु मानव शिशु उसी आयु के अन्य प्राणियों की तुलना में असहाय होता है। यदि शिशु के इस असहाय स्थिति मे सम्यक् देख–भाल एवं आश्रय न मिले तो उसका जीवन ही संकट में पड जाएगा। इसलिए उसे लम्बी अवधि तक जीवन मे अनेकानेक व्यवहारो का ज्ञान एव विविध कौशलो का प्रशिक्षण देना पडता है। बाल–जीवन के इस काल की शिक्षा एव प्रशिक्षण उसके भावी जीवन की तैयारी मे विशिष्ट महत्व रखते है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा मानव की अनिवार्य आवश्यकता सिद्ध होती है, जिसकी सम्यक् पूर्ति के अभाव मे मानव की दशा पशु सदृश्य ही होगी।

भारतीय वांङमय मे शिक्षा को मुक्ति का साधन तथा मनुष्य का तृतीय नेत्र कहा गया है। जब हम भारतीय इतिहास के पन्नो पर दृष्टिपात करते है तो पाते है कि भारतीय शिक्षा पद्धति, पूरी दुनिया मे श्रेष्ठ थी और इसी के फलस्वरूप भारत ने 'विश्व गुरु' का दर्जा भी प्राप्त किया था। विद्यार्थियो को इस प्रकार शिक्षित–प्रशिक्षित किया जाता था कि वे सहजता से सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सके।

विकास के क्रम मे देश, काल तथा परिस्थितियो के अनुसार हमारी शिक्षा पद्धति मे वर्तमान मे अत्यधिक परिवर्तन हुए है। जैसे–जैसे जनसंख्या वृद्धि हुई है, हमारे आकडो के अनुसार साक्षरता की दर मे निरन्तर वृद्धि हुई है। जहां 2001 में देश की साक्षरता दर 64.93: थी, वही 2011 मे बढकर 74.04: हो गई। वर्ष 2010–11 से 2014–15 के बीच हायर एजुकेशन संस्थानों मे पढने वाले छात्रो की संख्या 58 लाख बढ गई। अगले पांच वर्षो में 1.40 करोड नये छात्र जुडेगे। इसके साथ ही हम देखते हैं कि केन्द्र तथा राज्य सरकारे प्रतिवर्ष शिक्षा बजट मे भी वृद्धि करती रही है। तकनीकी के शिक्षा मे अनुप्रयोग ने शिक्षा को न केवल सरल, बल्कि सुलभ भी बना दिया है तथा दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार हो रहा है और यह अनुमान लगाया जा रहा है कि 2030 तक हम शिक्षा के लोकव्यापीकरण के लक्ष्य को हासिल कर लेंगे।

शिक्षा के इतने व्यापक प्रचार–प्रसार, इतना खर्च, इतनी साधन व सुविधाए होने बावजूद अखबारो में तथा न्यूज चैनल्स में हम कितनी ही बार ये देखते है तथा पढते है कि– 10वी कक्षा मे फैल होने पर छात्र ने खुदखुशी की, डठठै की छात्रा ने फांसी लगाकर जान दी, कोटा मे कोचिंग संस्थाओं के छात्र ने आत्महत्या की, प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लाखों में बिके, आई.पी.एस. ऑफीसर ने पत्नी को मारकर, स्वयं खुदखुशी की, कॉलेज छात्रों ने हिंसक वारदात को अजाम दिया इत्यादि। इस प्रकार की खबरें या घटनाएं हमारे सम्पूर्ण शिक्षा तंत्र पर गंभीर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थी अनैतिक कृत्यों मे लिप्त हो रहे है, तनावग्रस्त है, उनमे निर्णय क्षमता का अभाव है, उच्च शिक्षित–प्रशिक्षित युवक–युवतियां समाज एवं राष्ट्र विरोधी गतिविधियो में संलग्न हो रहे है, यहां तक की ष्ै जैसे आतंकी संगठन को जॉइन कर रहे हैं। आखिर क्यों? क्या यह हमारी शिक्षा पद्धति की असफलता नही है? कुछ तो हमारे शिक्षा तंत्र मे खामियां है, जिनके कारण हमारी शिक्षा, विद्यार्थियो को खुशी नही दे पा रही है। शिक्षा खुशहाली का माध्यम बने, इसके लिए विभिन्न सरकारी तथा गैर–सरकारी एजेन्सियो को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी, जैसे– परिवार, शिक्षण संस्थान, छळ्ळ्मए ञ्ळ्बए छ।।बए ङ्म्त्त इत्यादि। यहां हम 'खुशहाली के लिए शिक्षा' मे परिवार तथा शिक्षण सस्थानो की भूमिका का उल्लेख कर रहे हैं।

## परिवार की भूमिका–

बच्चे के लिए अनौपचारिक शिक्षा की प्रथम तथा सबसे प्रमुख संस्था परिवार है। परिवार के वातावरण, माता–पिता, भाई–बहन तथा अन्य सदस्यो के व्यवहार, आचरण, क्रियाकलाप, आपसी सम्बन्ध आदि से प्राप्त शिक्षा एवं संस्कार बच्चे के जीवन निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। किन्तु वर्तमान में उपभोक्तावादी संस्कृति तथा स्वार्थपरक मानसिकता के कारण न केवल संयुक्त परिवारो का विघटन हुआ है, बल्कि एकल परिवारो मे भी सम्बन्धो में मधुरता कम हुई है, जिसका सीधा प्रभाव बच्चों पर पड रहा है। जो जीवनमूल्य तथा सामाजिक ज्ञान बच्चो को दादा–दादी, नाना–नानी से अनायास ही प्राप्त हो जाता था, आज बच्चे उससे महरूम है। यदि हम चाहते हैं कि शिक्षा, बच्चो को खुशहाली प्रदान करे तो परिवार को अपना दायित्व निर्वहन करना ही होगा, जिनके अन्तर्गत प्रमुख विचारणीय बिन्दु इस प्रकार है–

**1. माता–पिता का अतिमहत्वाकांक्षी न होना–** वर्तमान मे प्रायः प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों को डॉक्टर, इन्जिनियर या प।ैं बनाना चाहते हैं, बिना ये सोचे–समझे कि उनके बच्चो मे इतनी क्षमता है भी या नहीं, माता–पिता की इस महत्त्वाकांक्षा



Scanned by CamScanner

की खातिर अनेक बच्चे अपनी जान तक दे देते हैं। यदि हम चाहते हैं कि शिक्षा, खुशी का माध्यम बने तो, यह आवश्यक है कि बच्चों की रूचि, योग्यता, अभिक्षमता के अनुसार बच्चों को शिक्षा की व्यवस्था की जाए।

**2. बच्चों के शैक्षिक–मित्र बनें अभिभावक–** माता–पिता के उनके बच्चों के साथ सम्बन्ध ऐसे होने चाहिये कि बच्चे बिना संकोच के अपनी व्यक्तिगत तथा शैक्षिक बातें उनसे साझा कर सके। बच्चे की असफलता पर उसे डांटें– फटकारें नहीं, बल्कि सकारात्मक रूप से अभिप्रेरित करें, ताकि बच्चा असफलता को अपनी सफलता का शस्त्र बनाना सीख सके। इसके साथ ही जितना हो सके बच्चों को वक्त दें और प्रत्येक समस्या को मित्रवत हल करने का प्रयास करें ताकि बच्चे में आत्मबल का विकास हो सके।

**3. नैतिक व सामाजिक मूल्यों का विकास–** परिवार से प्राप्त नैतिक व सामाजिक मूल्य ही होते थे, जिनसे बच्चों में उचित–अनुचित, अच्छे–बुरे, सही–गलत, सहिष्णुता, धैर्य, सहयोग, परिश्रम, संघर्ष की भावना विकसित होती थी। इसके माध्यम से वे प्राप्त शिक्षा का उपयोग अपने जीवन निर्माण तथा समाज निर्माण में कर पाते थे। किन्तु वर्तमान में एकल परिवार प्रथा, बुजुर्गों की उपेक्षा, माता–पिता का बच्चों को समय न देना आदि के कारण बच्चों को नैतिक व सामाजिक मूल्यों का ज्ञान समुचित नहीं मिल पा रहा है, जिससे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी उनके जीवन में खुशी का अभाव है। इस दिशा में माता–पिता तथा अभिभावकों को चिन्तन करना ही होगा, ताकि उनके जीवन में खुशहाली आ सके, जो कि प्रत्येक माता–पिता का सपना होता है।

**4. पारिवारिक वातावरण से भारतीय संस्कृति का ज्ञान–** वर्तमान में हमारा पारिवारिक वातावरण पूर्णतः पश्चिमी संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है, चाहे फिर वो हमारा खान–पान, पहनावा, भाषा, आपसी सम्बन्ध, भोगवादी प्रवृति हो या फिर अतिआधुनिकता की अंधी दौड। यह वातावरण बच्चों में असतुंष्टि की भावना भर रहा है, जिससे शिक्षा उन्हें खुशी नहीं दे पा रही। हमें इस दिशा मे चिन्तन करना होगा। माता–पिता को परिवार का माहौल भारतीय संस्कृति के अनुरूप ढालना होगा ताकि बच्चों में आध्यात्मिकतामय वैज्ञानिकता तथा पारम्परिकता युक्त आधुनिकता के गुणों का विकास हो सके। स्वयं गांधीजी पश्चिम की पैशाचिक संस्कृति स्पमि उमंद ´िअम उवतम (और ज्यादा) के स्थान पर पूर्व की संस्कृति श्रनेज मदवनही (बस इतना पर्याप्त) के प्रबल पक्षधर थे।

**5. पारवारिक सम्बन्धों में मधुरता–** व्यक्ति के जीवन की खुशहाली मे पारिवारिक सम्बन्धों का अहम योगदान होता है। परिवार में पति–पत्नी के आपसी तथा बच्चों के साथ सम्बन्ध, बुजुर्ग माता–पिता के साथ सम्बन्ध, बच्चों के आपसी सम्बन्धों में मधुरता परिवार के प्रत्येक सदस्य को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है, जिससे वे तनाव मुक्त होकर अपना अध्ययन, व्यवसाय आदि कार्य कर पाते हैं। इसके साथ ही बच्चों को विभिन्न पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा भी प्राप्त होती है, उनके जीवन में खुशहाली का साधन बनती है।

**शिक्षण संस्थाओं की भूमिका–**

जिस प्रकार अनौपचारिक शिक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण संस्था परिवार है, उसी प्रकार औपचारिक शिक्षा के प्रमुख केन्द्र शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थान हैं। भारत का हायर एजुकेशन सिस्टम 757 यूनिवर्सिटी तथा 38056 कॉलेजों के साथ चीन तथा अमेरिका के बाद तीसरे स्थान पर है। इतना होते हुए भी हमारी शिक्षा, खुशहाली का माध्यम नहीं बन पा रही है। हम अच्छे डॉक्टर, इन्जिनियर, वैज्ञानिक, वकील, नेता, अभिनेता आदि तो तैयार करने में सफल हो रहे हैं किन्तु खुशहाल नागरिकों का निर्माण में आज भी बहुत पीछे हैं। 'खुशहाली के लिए शिक्षा' में शिक्षण संस्थानों की भूमिका इस प्रकार हो सकती है–

**1. विद्यार्थियों में सम्यक्दृष्टिकोण का विकास–** यहां सम्यक् दृष्टिकोंण से हमारा अभिप्राय सकारात्मक सोच के विकास से है या दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव लाने से है। यदि विद्यार्थियों में गुरु, ज्ञान तथा परिग्रह के प्रति सम्यक् दृष्टिकोंण का विकास किया जाए तो निश्चित ही शिक्षा खुशहाली का माध्यम बन सकती है। सम्यक् दृष्टिकोंण के विकास से व्यक्तित्व में धैर्य, समायोजन, निर्णयक्षमता, अपरिग्रह, संयम जैसे उच्च मानवीय मूल्यों का विकास होता है और जब विद्यार्थियों का व्यक्तित्व इन मूल्यों से समृद्ध होगा तो, उनमें कभी निराशा आ ही नहीं सकती है। सम्यक् दृष्टिकोंण के विकास में आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के अवदान–जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग की महत्वपूर्ण भूमिका है, अतः शिक्षण संस्थानों में जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान का अनिवार्य प्रशिक्षण करवाया जाना चाहिये।

**2. समुचित निर्देशन एवं परामर्श–** वर्तमान मे एकल परिवार प्रथा के प्रचलन तथा माता–पिता दोनों का नौकरी करना जैसे कारणों से बच्चों को समुचित निर्देशन परिवार में नहीं मिल पा रहा है, जिससे यह जिम्मेदारी शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों पर आ जाती है। यदि बच्चों को सही समय पर सही मार्गदर्शन एवं अभिप्रेरणा मिलती रहे तो, उन्हे जीवन में सफलता के साथ खुशहाली अवश्य मिलेगी। किन्तु हमारे देश मे आज भी शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं में पृथक से निर्देशन परामर्श की कोई व्यवस्था नहीं है। यदि हम चाहते हैं शिक्षा विद्यार्थियों के लिए खुशी का माध्यम बने तो प्रत्येक शिक्षण संस्थान में पृथक से निर्देशन–परामर्श की व्यवस्था, तथा विशेषज्ञों की नियुक्ति की जानी चाहिये।



Scanned by CamScanner

**3. व्यावसायिक पाठ्यक्रम–** प्राय. प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा शिक्षा प्राप्ति का उद्देश्य रोजगार प्राप्ति होता है, जो आवश्यक भी है, किन्तु हमारी शिक्षा इस उद्देश्य को पूर्ण नही कर पा रही है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण बेरोजगारी का दिन–प्रतिदिन बढ़ता ग्राफ है। इसके लिए आवश्यक है, उच्च प्राथमिक कक्षाओं से व्यावसायिक पाठ्यक्रम आरम्भ किये जाएं। यद्यपि हाल ही में सी.बी. एस.ई. बोर्ड ने यह आरम्भ करने का निर्णय भी किया है किन्तु, इसको व्यापक स्तर पर लागु करने की जरूरत है, ताकि विद्यार्थी प्रारम्भ से ही स्वरूचि के पाठ्यक्रम की शिक्षा ग्रहंण कर सके तथा शिक्षणोपरान्त अपना रोजगार कर सकें। वर्तमान भारत सरकार का 'कौशल विकास कार्यक्रम' इस दिशा मे प्रशसनीय कदम है।

**4. योग शिक्षा का समुचित क्रियान्वयन–** अरस्तु ने कहा था– स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण ही शिक्षा है। वर्तमान में विद्यार्थियों में बढ रहे तनाव, दुश्चिन्ता, अस्वस्थता, कुसामायोजन, आदि जो कि उनके स्वस्थ विकास एवं खुशहाली मे सबसे बडी बाधा है, को रोकने का यदि सबसे बडा कोई साधन है तो वह है योग शिक्षा। यद्यपि हाल ही में भारत सरकार ने योग शिक्षा को अनिवार्य करने का निर्णय लिया है, किन्तु आवश्यकता है इसके समुचित क्रियान्वयन की, जिसकी जिम्मेदारी हम शिक्षकों की अधिक है। हम सबको मिलकर इसमें अपना योगदान देना है, ताकि हम अपने बच्चों/विद्यार्थियों को खुशहाल भविष्य दे पाएं।

**5. सामाजिक कौशल एवं मूल्य शिक्षा–** व्यक्ति के जीवन की खुशहाली में मूल्यों तथा सामाजिक कौशलों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पिछले कुछ वर्षो से हम देख रहे हैं कि युवा पीढी में मूल्यों का क्षरण तीव्र गति से हुआ है। उनका ज्ञानात्मक विकास तो हो रहा है, किन्तु भावात्मक विकास पीछे छूटता जा रहा है। अभिव्यक्ति कौशल के अभाव में वे सामाजिक सम्बन्ध बनाने एवं निभाने में पिछड़ रहे हैं। न गुरू का सम्मान करते है न ही माता–पिता का। अर्थाजन हेतु अनैतिक तथा राष्ट्रविरोधी कार्य करने में भी नहीं झिझकते। जिसका परिणाम ही है उनके जीवन से दूर होती खुशहाली। अतः आज आवश्यकता है विद्यार्थियों को प्रारम्भिक कक्षाओं से ही मूल्य शिक्षा प्रदान करने की, जो कि विभिन्न विषयों के माध्यम से, विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा, शिक्षकों के आचरण से तथा संस्थान के वातावरण से प्रदान की जानी चाहिये।

**6. भयमुक्त एवं स्वस्थ प्रतिर्स्पधात्मक वातावरण–** अनेक प्राइवेट शिक्षण संस्थानों में विशेषकर 10वीं, 12वीं कक्षाओं के विद्यार्थियों पर मेरिट में आने को लेकर अत्यधिक प्रताड़ित किया जाता है। जिसे अनेक बच्चे सहन नहीं कर पाते, जो या तो विद्यालय छोड़ देते हैं और कभी–कभी तो आत्महत्या तक कर लेते हैं। ऐसे भययुक्त तथा तनावपूर्ण माहौल में प्राप्त शिक्षा खुशी कैसे दे सकती है। इस दिशा में चिन्तन की आवश्यकता है। शिक्षण संस्थानों में भयमुक्त तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण प्रदान करने में समाज तथा सरकारी तंत्र दोनों को संयुक्त भूमिका निभानी होगी। ताकि शिक्षा, बच्चों के लिए खुशहाली का माध्यम बन सके।

इस प्रकार सारांशतः यह कहा जा सकता है कि 'खुशहाली के लिए शिक्षा' हेतु परिवार में प्राप्त अनौपचारिक शिक्षा तथा शिक्षण संस्थानों में प्राप्त होने वाली औपचारिक शिक्षा में कुछ तथ्यों पर विचार करना होगा, जिनमें से कुछ का उल्लेख इस शोधपत्र में किया गया है। वास्तव में खुशी का सम्बन्ध मन की संतुष्टि से होता है। यदि शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में परिश्रम, धैर्य, संयम, अपरिग्रह, सहिष्णुता, सामाजिक कौशल, समायोजन, सम्यक् दृष्टिकोंण जैसे जीवन मूल्यों का विकास किया जाए तो, व्यक्ति के जीवन में कभी भी निराशा, हताषा, दुःख, तनाव, कुसमायोजन जैसे भावों का उदय नहीं होगा तथा वह एक खुशहाल जीवनयापन कर सकेगा। यदि हम चाहते हैं कि शिक्षा हमारे देश में बच्चों के जीवन में खुशहाली ला सके, तो इसके लिए सर्वाधिक प्रयास माता–पिता, अभिभावक तथा शिक्षकों को करने होंगे, इसके बाद ही हम सरकारी तंत्र से कुछ अपेक्षाएं कर सकते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ


- *पाठक एवं त्यागी (2008), भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
- *पाण्डेय, रामशक्ल (2007), शिक्षा के मूल सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
- *मिश्रा, महेन्द्र कुमार (2007), भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा दर्शन, ज्ञान प्रकाशन, जयपुर।*
- *व्यास, एम.एस. (2005), भारतीय शिक्षा : नई दिशाएं, नये आयाम, क्लासिक कलैवशन, जयपुर।*
- *मल्लिप्रज्ञा, समणी, जोशी, हेमलता (2009), शिक्षा दर्शन एवं मूल्य विकास, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.)।*
- *सिंह, कृष्णवीर (2008), भारत में शैक्षिक विकास, युनिवर्सिटी बुक हाउंस, जयपुर (राज.)।*
- *शिविरा पत्रिका, (दिसम्बर–2015), राज.मा.शि. निदेशालय, बीकानेर।*
- *युवा दृष्टि (दिसम्बर–2012), अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद, नई दिल्ली।*
- *शिक्षा विमर्श (नवम्बर–दिसम्बर–2014), भाटोलिया पब्लिसर्स, जयपुर।*
- *दैनिक भास्कर समाचार पत्र, 7 जनवरी 2016।*




Scanned by CamScanner